

हर हर शङ्कर

ॐ

जय जय शङ्कर



श्री-वेद-व्यासाय नमः

श्रीमद्-आद्य-शङ्कर-भगवत्पाद-परम्परागत-मूलाम्नाय-
सर्वज्ञ-पीठम्
श्री-काञ्ची-कामकोटि-पीठम्
जगद्गुरु-श्री-शङ्कराचार्य-स्वामि-श्रीमठ-संस्थानम्

॥ प्रयाग-स्नान-विधिः ॥

५१२५ क्रोधी धनुः २९-कुम्भः १४ माघ-मासः 13.01-14.02.2025

आचमनम्। शुक्लाम्बरधरं + शान्तये। प्राणायामः।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षय-द्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव तारा-बलं चन्द्र-बलं तदेव।
विद्या-बलं दैव-बलं तदेव लक्ष्मी-पतेः अङ्घ्रि-युगं स्मरामि ॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।
श्रीराम-स्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः ॥

श्री-राम राम राम

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

☎ 9884655618

☎ 8072613857

✉ vdpsabha@gmail.com

🌐 vdpsabha.org

तिथिर्विष्णुः तथा वारः नक्षत्रं विष्णुरेव च।
योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥

श्री-गोविन्द गोविन्द गोविन्द

अद्य श्री-भगवतः महा-पुरुषस्य विष्णोः आज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणः द्वितीय-परार्धे
श्वेतवराह-कल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बू-द्वीपे
भारत-वर्षे भरत-खण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे विन्ध्यस्य उत्तरे आर्यावर्त-अन्तर्गत-
ब्रह्मावर्त-एकदेशे विष्णु-प्रजापति-क्षेत्रे षट्-कूल-मध्ये अन्तर्वेद्यां भागीरथ्याः पश्चिमे
तीरे कालिन्ध्याः उत्तरे तीरे वटस्य पूर्व-दिग्-भागे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां
प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये बार्हस्पत्य-मानेन कालयुक्त-नाम संवत्सरे
सौर-चान्द्र-मानाभ्यां क्रोधि-नाम संवत्सरे उत्तरायणे हेमन्त/शिशिर-ऋतौ सौर-
मानेन धनुः/मकर/कुम्भ-मासे चान्द्र-मानेन पौष/माघ-मासे शुक्ल/कृष्ण-पक्षे
___ शुभ-तिथौ ___-वासर-युक्तायां ___-नक्षत्र-युक्तायाम् ___-योग-युक्तायां
___-करण-युक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां ___ शुभ-तिथौ

| Feb | -पक्षे | शुभ-तिथौ | (पर्यन्तं) | -वासर- | -नक्षत्र- | (पर्यन्तं) | -योग- | (पर्यन्तं) | -करण | (पर्यन्तं) | (पर्यन्तं) |
|-----|--------|--------------|------------|-----------|---------------|------------|-----------|------------|-----------|------------|------------|
| Feb | -पक्षे | शुभ-तिथौ | युक्तायां | युक्तायां | युक्तायां | युक्तायां | युक्तायां | युक्तायां | युक्तायां | युक्तायां | युक्तायां |
| ११ | शुक्ल | चतुर्दश्यां | १८:५६ | भौम | पुष्य | १८:३३ | आयुष्मद् | ०९:०३ | गरजा | ०६:५३ | वणिजा |
| १२ | शुक्ल | पौर्णमास्यां | १९:२३ | सौम्य | आश्रेषा | १९:३४ | सौभाग्य | ०८:०४ | भद्रा | ०७:०६ | वव |
| १३ | कृष्ण | प्रथमायां | २०:२२ | गुरु | मघा | २१:०६ | शोभन | ०७:२८ | बालव | ०७:४९ | कौलव |
| १४ | कृष्ण | द्वितीयायां | २१:५३ | भृगु | पूर्व-फल्गुनी | २३:०८ | अतिगण्ड | ०७:१७ | तैतिल | ०९:०४ | गरजा |
| १५ | कृष्ण | तृतीयायां | २३:५३ | स्थिर | उत्तर-फल्गुनी | +१:३८ | सुकर्म | ०७:३० | वणिजा | १०:५० | भद्रा |
| १६ | कृष्ण | चतुर्थ्यां | +२:१६ | भानु | हस्त | +४:३० | धृति | ०८:०३ | वव | १३:०२ | बालव |
| १७ | कृष्ण | पञ्चम्यां | +४:५४ | इन्दु | चित्रा | / | शूल | ०८:५२ | कौलव | १५:३४ | तैतिल |
| १८ | कृष्ण | षष्ठ्यां | / | भौम | चित्रा | ०७:३४ | गण्ड | ०९:१९ | गरजा | १८:१४ | वणिजा |
| १९ | कृष्ण | षष्ठ्यां | ०७:३३ | सौम्य | स्वाती | १०:३८ | वृद्धि | १०:४५ | वणिजा | ०७:३३ | भद्रा |
| २० | कृष्ण | सप्तम्यां | ०९:५९ | गुरु | विशाखा | १३:२९ | ध्रुव | ११:३१ | वव | ०९:५९ | बालव |
| २१ | कृष्ण | अष्टम्यां | ११:५८ | भृगु | अनुराधा | १५:५३ | व्याघात | ११:५६ | कौलव | ११:५८ | तैतिल |
| २२ | कृष्ण | नवम्यां | १३:२० | स्थिर | ज्येष्ठा | १७:३९ | हर्षण | ११:५३ | गरजा | १३:२० | वणिजा |
| २३ | कृष्ण | दशम्यां | १३:५६ | भानु | मूल | १८:४१ | वज्र | ११:१६ | भद्रा | १३:५६ | वव |
| २४ | कृष्ण | एकादश्यां | १३:४५ | इन्दु | पूर्वाषाढा | १८:५८ | सिद्धि | १०:०३ | बालव | १३:४५ | कौलव |
| २५ | कृष्ण | द्वादश्यां | १२:४८ | भौम | उत्तराषाढा | १८:३० | व्यतीपात | ०८:१२ | तैतिल | १२:४८ | गरजा |
| | | | | | | | वरीयो | +५:४८ | | | |
| २६ | कृष्ण | त्रयोदश्यां | ११:०९ | सौम्य | श्रोणा | १७:२२ | परिघ | +२:५५ | वणिजा | ११:०९ | भद्रा |
| २७ | कृष्ण | चतुर्दश्यां | ०८:५५ | गुरु | श्रविष्ठा | १५:४३ | शिव | २३:३९ | शकुनि | ०८:५५ | चतुष्पात |
| | कृष्ण | अमावास्यायां | +६:१५ | | | | | | | | नागवत् |

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षय-द्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थम् अनादि-अविद्या-वासनया
प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसार-चक्रे विचित्राभिः कर्म-गतिभिः विचित्रासु
पशु-पक्षि-मृगादि-योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्य-कर्म-विशेषेण
इदानीन्तन-मानुष-द्विज-जन्म-विशेष-प्राप्तौ मम जन्माभ्यासात् जन्म-प्रभृति एतत्-

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

क्षण-पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौवने वार्धके च जागृत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु मनो-वाक्-काय-कर्मेन्द्रिय-ज्ञानेन्द्रिय-व्यापारैः काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-आदिभिः दुष्ट-गुणैः च सम्भावितानां संसर्ग-निमित्तानां बहु-वारं सम्पन्नानां महा-पातकानां सम-पातकानाम् अति-पातकानाम् उपपातकानां सङ्करी-करणानां मलिनी-करणानाम् अपात्री-करणानां जाति-भ्रंश-कराणां प्रकीर्णकानाम् अयाज्य-याजन-अभोज्य-भोजन-अभक्ष्य-भक्षण-अपेय-पान-अदृश्य-दर्शन-अश्राव्य-श्रवण-अस्पृश्य-स्पर्शन-अव्यवहार्य-व्यवहार-आदीनां ज्ञानतः सकृत् कृतानाम् अज्ञानतः असकृत् कृतानां रहस्य-कृतानां प्रकाश-कृतानां चिर-काल-अभ्यस्तानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं श्रुति-स्मृति-पुराण-प्रतिपादितेषु कर्मसु अधिकार-सिद्ध्यर्थं च विनायक-वेणी-माधव-सिद्धेश्वर-आदि-अनेक-देवता-सन्निधौ सहस्रलिङ्गेश्वर-वेङ्कटेश्वर-कामाक्षी-रत्न-त्रय-शङ्कर-विमान-मण्डप-दृष्टि-पथे ... अन्तर्गतया सरस्वत्या सहिते सितासित-सरित्-सङ्गमे त्रिवेण्यां भागीरथ्यां महा-कुम्भ-पर्वणि स्नानम् अहं करिष्ये ॥ (अप उपस्पृश्य)

प्रार्थना

ॐ नमो देव-देवाय शितिकण्ठाय दण्डिने।
रुद्राय चाप-हस्ताय चक्रिणे वेधसे नमः ॥

सागर-स्वन-निर्घोष दण्ड-हस्त असुरान्तक।
जगत्-स्रष्टः जगन्मर्दिन् नमामि त्वां सुरेश्वर ॥

समस्त-जगदाधार शङ्ख-चक्र-गदाधर।
देहि देव ममानुज्ञां युष्मत्-तीर्थ-निषेवणे ॥

तीक्ष्ण-दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त-दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

त्रिवेणीं माधवं सोमं भरद्वाजं च वासुकिम्।
वन्देऽक्षय-वटं शेषं प्रयागं तीर्थ-नायकम् ॥

त्वं राजा सर्व-तीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं तीर्थं मे देहि तीर्थ-राज नमोऽस्तु ते ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

सरस्वती च सावित्री वेद-माता गरीयसी।
 सन्निधात्री भवत्वत्र तीर्थे पाप-प्रणाशिनि ॥
 गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
 मुच्यते सर्व-पापेभ्यो विष्णु-लोकं स गच्छति ॥
 मकरे च दिवा-नाथे वृष-राशि-स्थिते गुरौ।
 प्रयागे कुम्भ-योगोऽयं माघ-मासे विधु-क्षये ॥
 अश्वमेध-सहस्रेभ्यो वाजपेय-शता-दपि।
 पृथिवी-दान-लक्षा-च्च कुम्भ-योगो विशिष्यते ॥

மந்த்ரங்களையோ பகவந் நாமத்தையோ மட்டும் சொல்லி மௌனத்துடன் ஸ்நானம் செய்ய வேண்டும். நதியில் ஸ்நானம் பண்ணுவோர் ப்ரவாஹத்தை பார்த்தவாறும், மற்ற இடங்களில் ஸ்நானம் பண்ணுவோர் ஸுர்யனைப் பார்த்தவாறும் செய்ய வேண்டும்.

கீழ்க்கண்ட ப்ரயோகங்களில் உள்ள வேத மந்த்ரங்களை அவற்றைக் கற்றவர் சொல்லவும். மற்றவர் தமக்கு இஷ்டமான பகவந் நாமத்தையோ ஸ்தோத்ரத்தையோ மந்த்ரமாக சொல்லலாம். மந்த்ரமின்றி ஸ்நானம் செய்யக்கூடாது.

सूक्तपठनम्

வருணஸூக்தத்தை ஜபிக்க வேண்டும். தெரியாதவர்கள் புருஷஸூக்தத்தையாவது ஜபிக்கலாம். இது வருணனுக்கான ப்ரார்த்தனை.

मार्जनम्

आपो हि ष्टा मयोभुवः ...

என்னும் மந்த்ரங்களால் ஸந்த்யாவந்தனத்தில் செய்வதைப் போல் ப்ரோக்ஷித்துக் கொள்ள வேண்டும்.

अघमर्षणम्

हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये ...

என்னும் மந்த்ரங்களை தெரிந்தவர்கள் ஜபிக்கவும். தெரியாதவர்கள் இங்கும் புருஷஸூக்தத்தை ஜபிக்கலாம். இங்கு 12 முறையாவது மூழ்கி ஸ்நானம் செய்ய வேண்டும்.

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

☎ 9884655618

☎ 8072613857

✉ vdspsabha@gmail.com

🌐 vdspsabha.org

स्नानाङ्ग-तर्पणम्

ममोपात्त+प्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् — शुभतिथौ
स्नानाङ्ग-देव-ऋषि-पितृतर्पणं करिष्ये ॥

என்று ஸங்கல்பித்து ப்ராஹ்ம யஜ்ஞத்தில் உள்ளதைப் போல் ஸ்நானாங்கதர்ப்பணத்தைச்
செய்ய வேண்டும்.

दानम्

யதாஸக்தி தக்ஷிணையை கீழ்காணும் மந்தரத்தைச் சொல்லி ப்ராஹ்மணாளுக்கு
தானம் செய்ய வேண்டும்.

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

महाकुम्भ-पर्वणि-अनुष्ठित-स्नान-सादुप्यार्थं यथोक्त-फलप्राप्त्यर्थम् इमां दक्षिणां
ब्राह्मणाय सम्प्रददे। न मम।

यक्ष्म-तर्पणम्

உடம்பில் உள்ள வியர்வை போன்ற அழுக்குகளை புண்யதீர்த்தத்தில் நாம்
சேர்ப்பதால் ஏற்படக்கூடிய பாபத்தை போக்க கீழ்காணும் ம்லோகத்தைச்
சொல்லி கரையில் ஒரு முறை இருகைகளாலும் ஜலமெடுத்து யக்ஷ்ம
தேவதைக்கு தர்ப்பணம் செய்யவேண்டும்.

यन्मया दूषितं तोयं शारीर-मल-सञ्चयात्।

तद्-दोष-परिहारार्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम्॥

(एवं त्रिः)

स्तोत्रम्

सुर-मुनि-दिति-जेन्द्रैः सेव्यते योऽस्त-तन्द्रैः

गुरुतर-दुरितानां का कथा मानवानाम्।

स भुवि सुकृत-कर्तुः वाञ्छितावाप्ति-हेतुः

जयति विजित-यागः तीर्थ-राजः प्रयागः ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

श्रुतिः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं
पुराणमप्यत्र परं प्रमाणम्।
यत्रास्ति गङ्गा यमुना प्रमाणं
स तीर्थ-राजो जयति प्रयागः ॥

न यत्र योगाचरण-प्रतीक्षा
न यत्र यज्ञेष्टि-विशिष्ट-दीक्षा।
न तारक-ज्ञान-गुरोः अपेक्षा
स तीर्थ-राजो जयति प्रयागः ॥

चिरं निवासं न समीक्षते यः
उदार-चित्तः प्रददाति कामान्।
यः कामितार्थाश्च ददाति पुंसां
स तीर्थ-राजो जयति प्रयागः ॥

तीर्थावली यस्य तु कण्ठ-भागे
दानावली वल्गति पादमूले।
व्रतावली दक्षिण-बाहु-मूले
स तीर्थ-राजो जयति प्रयागः ॥

यत्राप्नुतानां न यमो नियन्ता
यत्र स्थितानां सुगति-प्रदाता।
यत्राश्रितानाम् अमृत-प्रदाता
स तीर्थ-राजो जयति प्रयागः ॥

सितासिते यत्र तरङ्ग-चामरे
नद्यौ विभाते मुनि-भानु-कन्यके।
नीलातपत्रं वट एव साक्षात्
स तीर्थ-राजो जयति प्रयागः ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

समर्पणम्

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥

अनेन मया कृतेन महा-कुम्भ-पर्वणि प्रयाग-क्षेत्रे स्नानेन तीर्थ-राज-स्वरूपी परमात्मा
सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ॥

